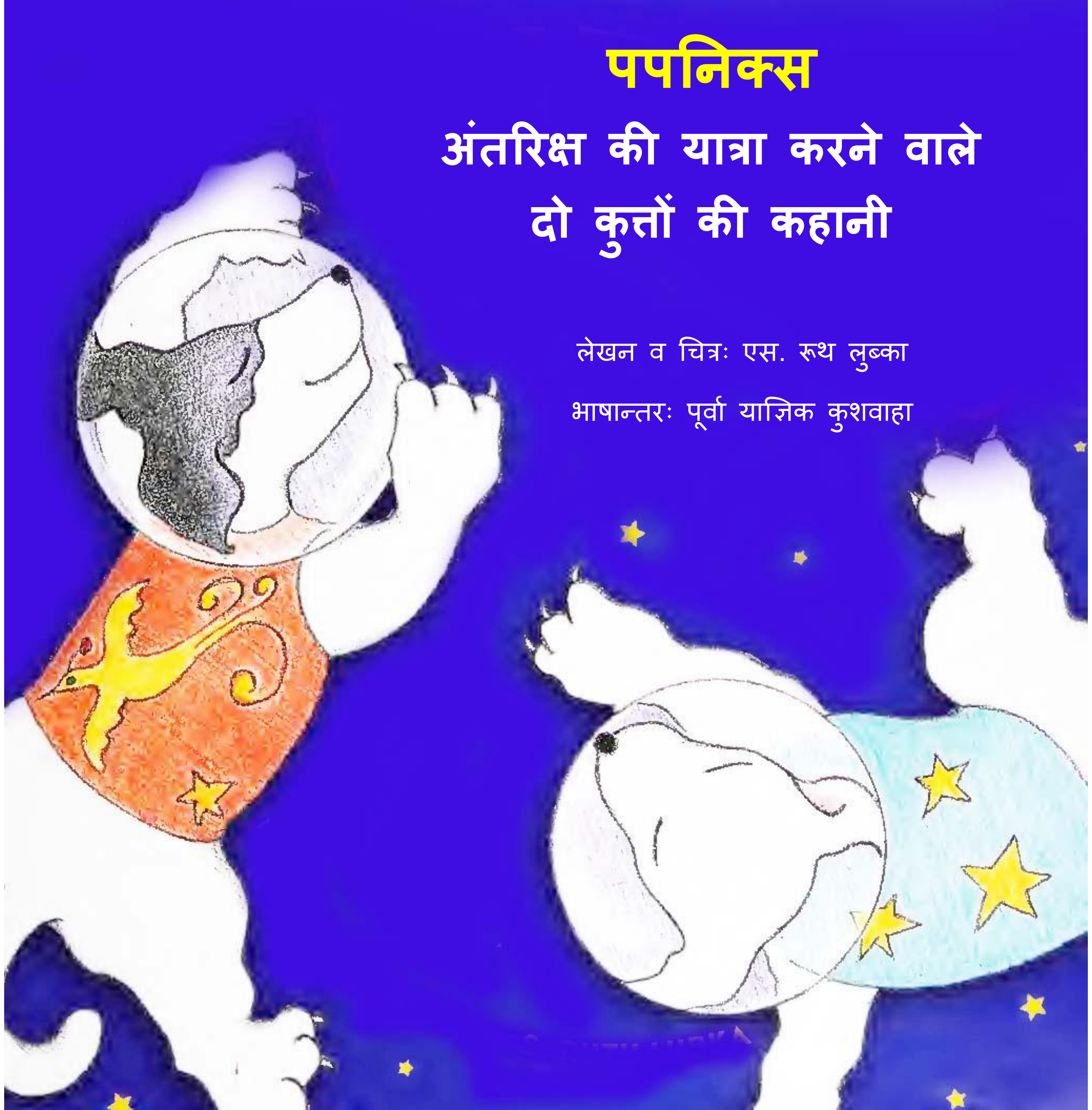
पपनिक्स

अंतरिक्ष की यात्रा करने वाले दो कुत्तों की कहानी

लेखन व चित्रः एस. रूथ लुब्का

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



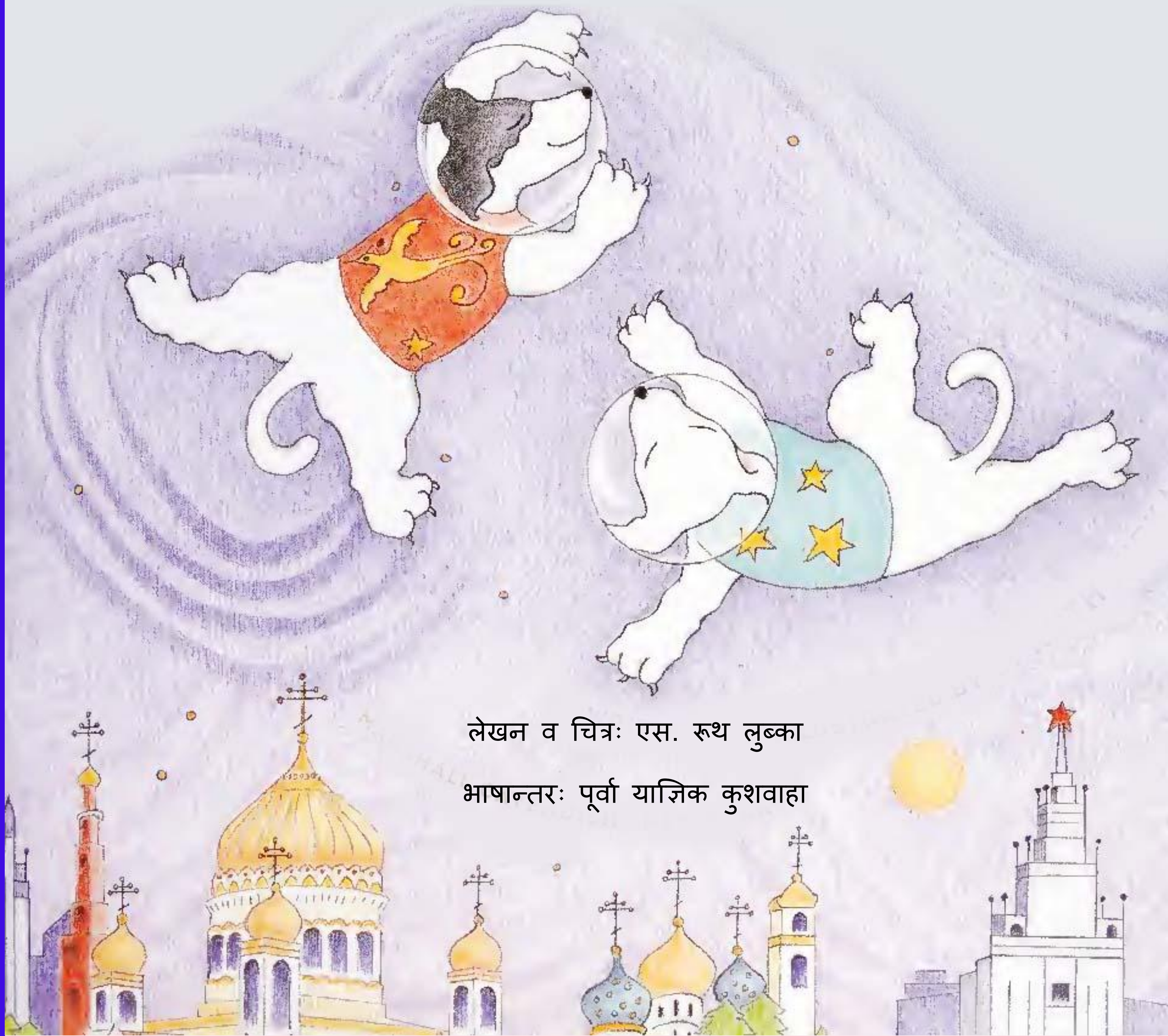
पपनिक्स दो रूसी कुत्तों, बैल्का और स्ट्रैल्का की कहानी है, जिन्होंने 1960 में रूसी अंतरिक्ष यान स्पुतनिक-5 में, पृथ्वी की परिक्रमा की थी। उनके सहयात्री थे धूसर रंग का एक खरगोश व कुछ अन्य पशु व पौधे। ये दोनों मादा कुत्ते पहले पशु थे जो अंतरिक्ष की यात्रा कर ज़िन्दा लौटे थे। इस अभियान की सफलता ने भविष्य में मानव द्वारा अंतरिक्ष की यात्रा का पथ प्रशस्त किया था।

बैल्का व स्ट्रैल्का को उनकी इस यात्रा के लिए प्रशिक्षित किया गया था। उन्होंने अंतरिक्ष सूट को पहनना, भूखे होने पर जैली खाना, और शून्य गुरुत्वाकर्षण में बचे रह पाना सीखा था। हालांकि उन्हें अंतरिक्ष रोग (चक्कर या उल्टी आना आदि) महसूस हुआ पर वे पृथ्वी पर ज़िन्दा और स्वस्थ वापस लौटे।

1961 में स्ट्रैल्का के चार बच्चे हुए। निकिता ख्रुश्चेव ने, जो उस वक्त यूएसएसआर के प्रमुख थे, अमरीका के राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी व उनकी पत्नी को, स्ट्रैल्का का एक पिल्ला, पुशिंका, भेंट किया। बाद में उसके भी चार बच्चे हुए, जिन्हें राष्ट्रपति कैनेडी ने "पपनिक्स" का नाम दिया।

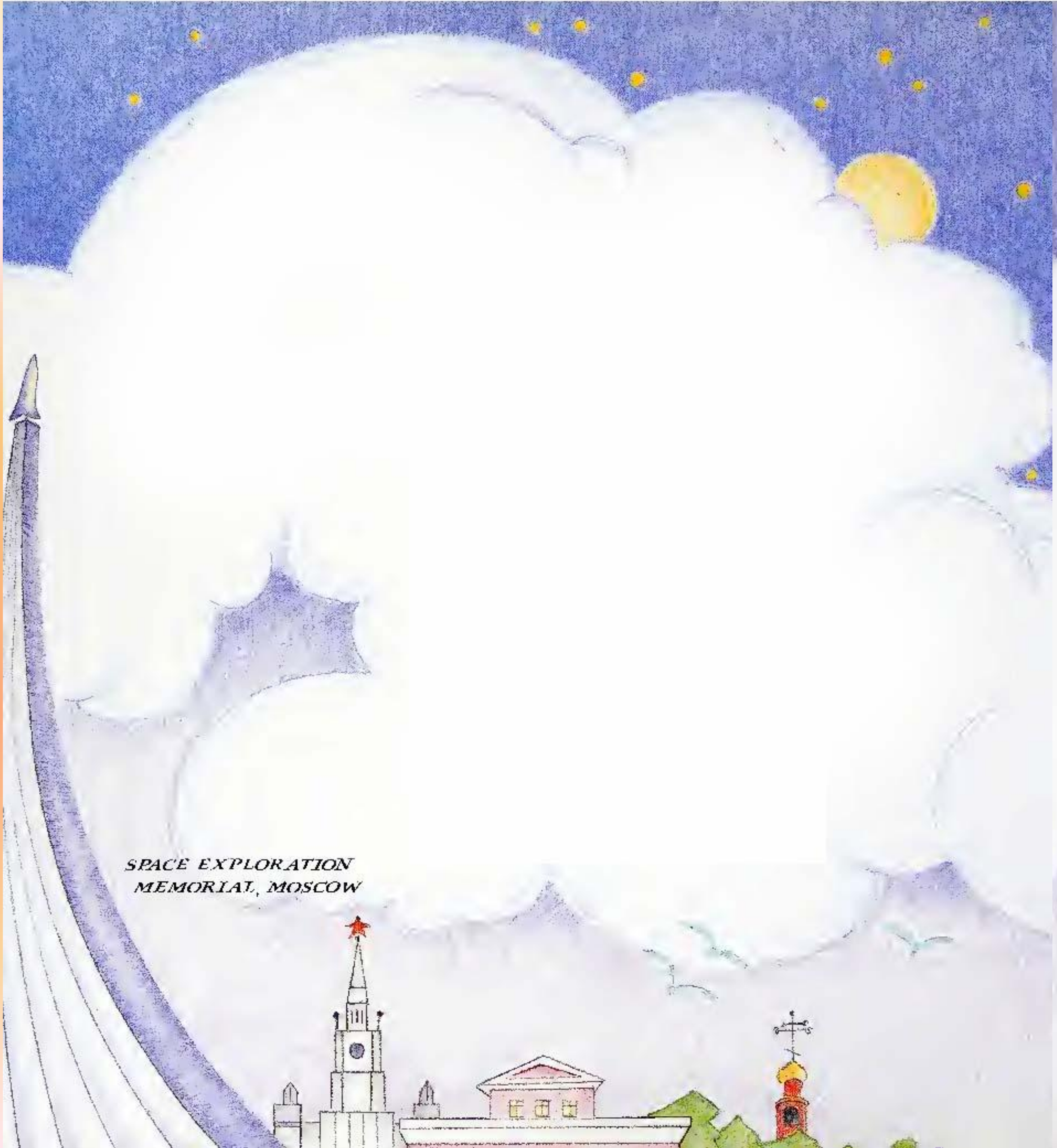
पपनिक्स

अंतरिक्ष की यात्रा करने वाले
दो कुत्तों की कहानी



लेखन व चित्रः एस. रूथ लुब्का

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



कोलम्बिया स्पेस शटल, 1 फरवरी 2003 में
मरने वाले सातों की स्मृति में

अगिनपाखी



रूसी किंवदन्ति के अनुसार एक जादूई पक्षी था, जो अगिनपाखी (अग्निपक्षी) कहलाता था। उस पाखी के पंख सूरज की ही तरह तेज़ प्रकाश और गरमी देते थे। माना जाता था कि अगर कोई राजकुमार उसे पकड़ लेता है, तो राजकुमारी से विवाह करने का उसका सपना पूरा हो सकता है। पर उस पाखी की तलाश ख़तरों से भरी थी, कहते हैं, बिना कठिनाइयों और ख़तरों के कोई 'हीरो' बन भी तो नहीं सकता।

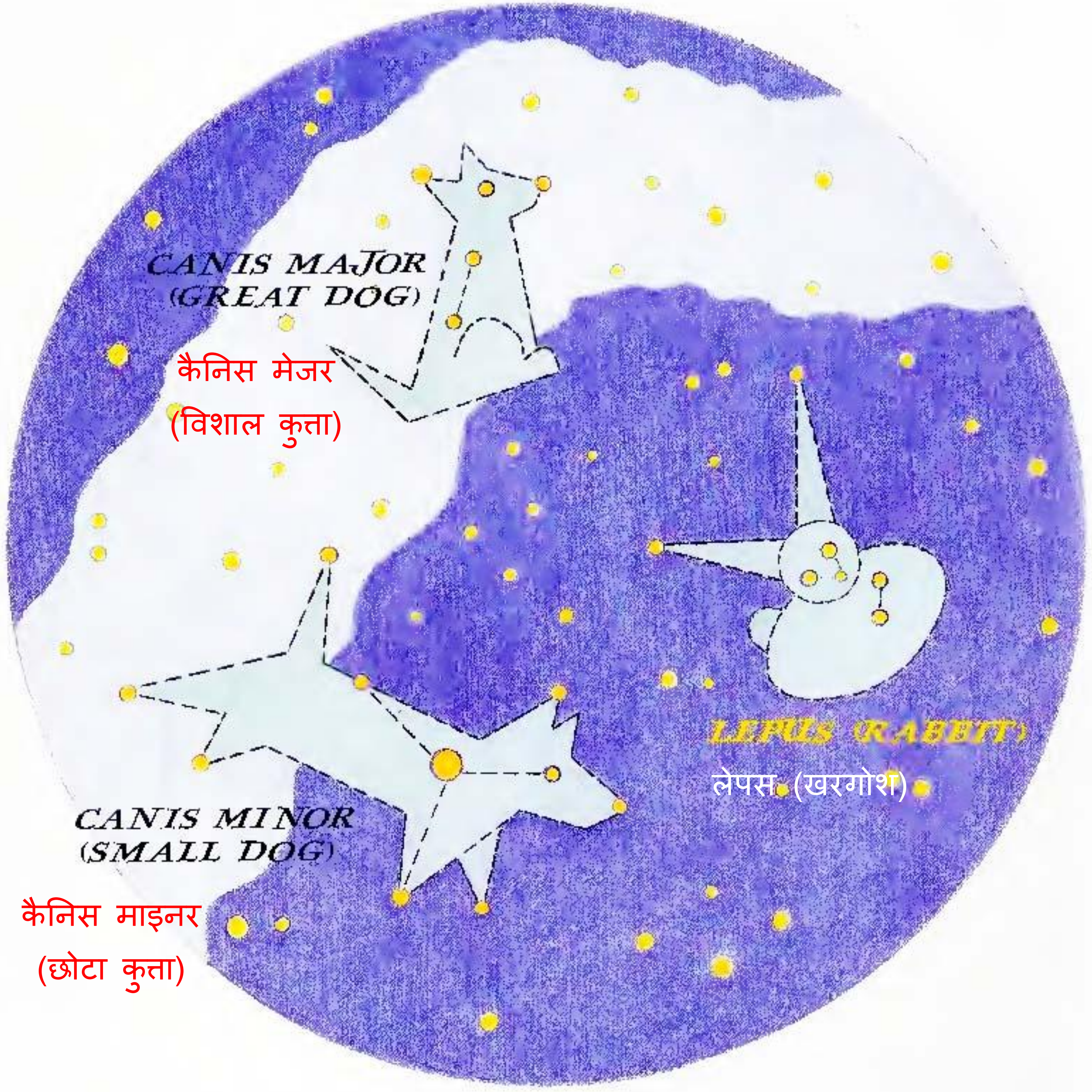
यह क़िताब आइगोर ओलेगोविच को, जो मेरे रूसी राजकुमार हैं, तथा दुनिया भर के मानव व कुकुर नायकों को समर्पित है।

- एस. रूथ लुब्का



अंतरिक्ष की यात्रा करने वाले प्रथम मानव
यूरी गागारिन का मास्को में स्थित स्मारक

तारामण्डल

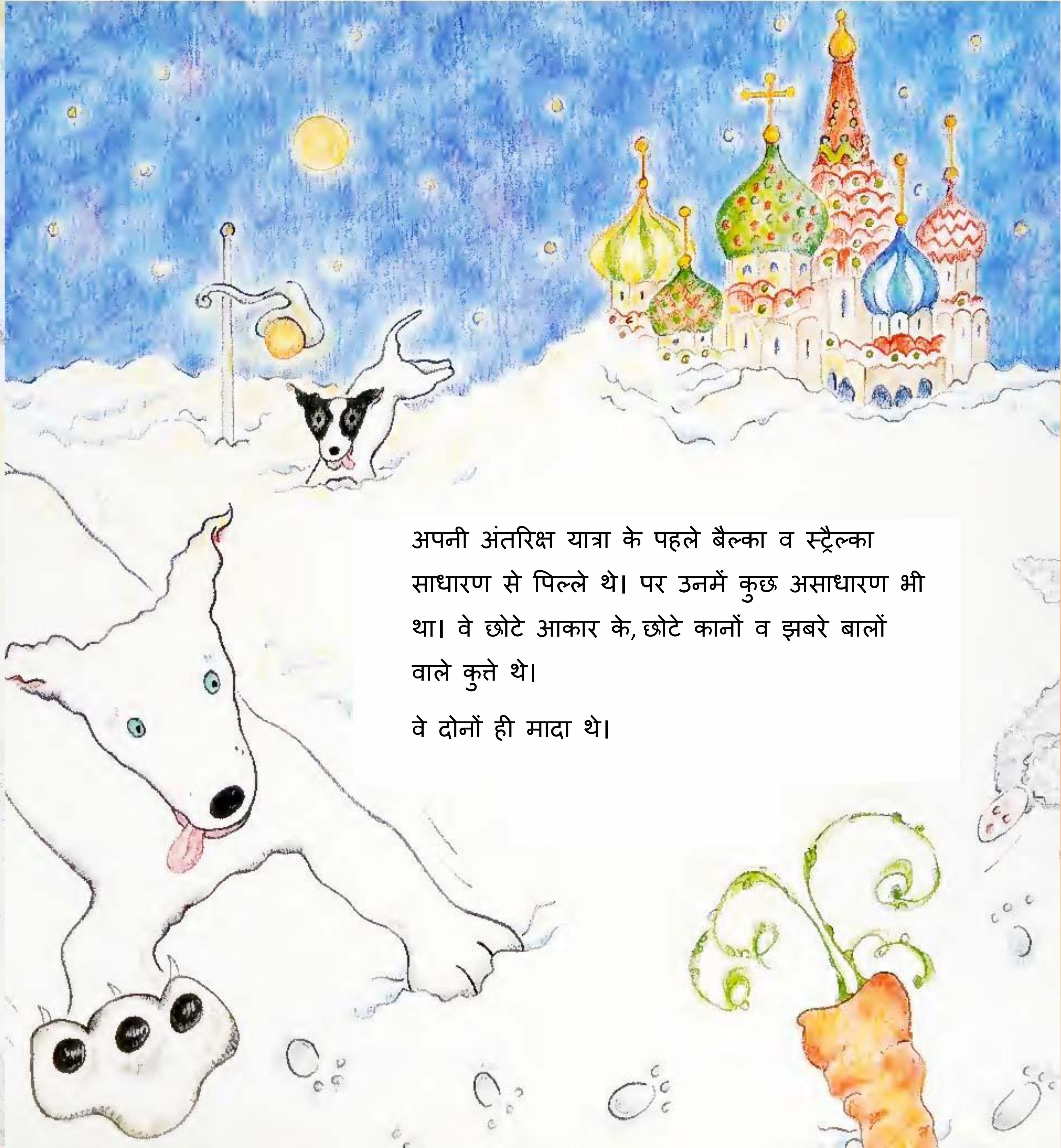


बहुत पहले 1960 में, दो रूसी कुत्तों बैल्का व स्ट्रैल्का को अंतरिक्ष में भेजा गया था।



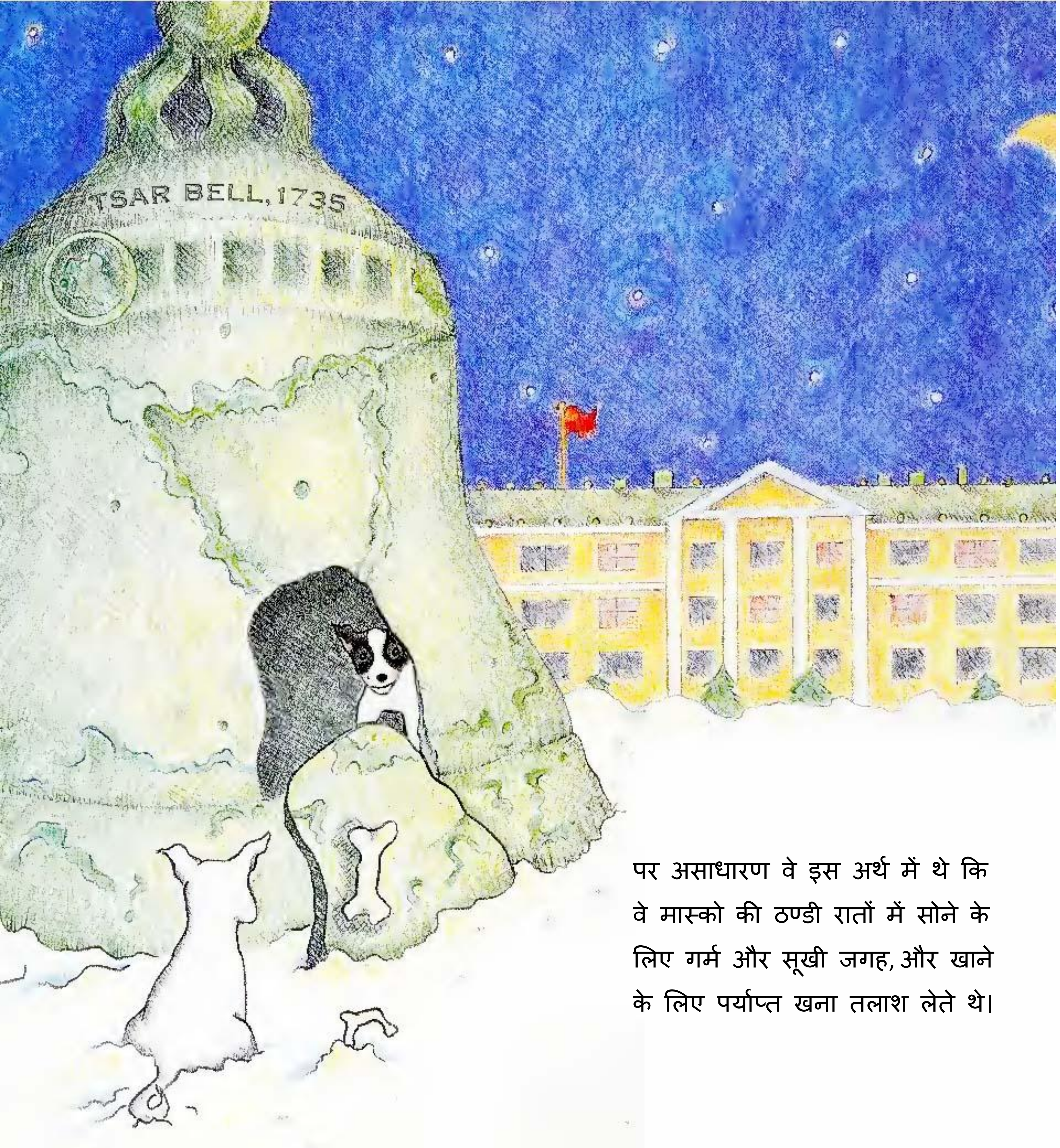
एक सुरमई रंग का खरगोश, चालीस चूहे, दो बड़े मूसे, सौ मक्खियाँ, और फूलों वाले पौधों को भी उनके साथ भेजा गया था। स्पुतनिक-5 में बहुत भीड़-भाड़ थी।



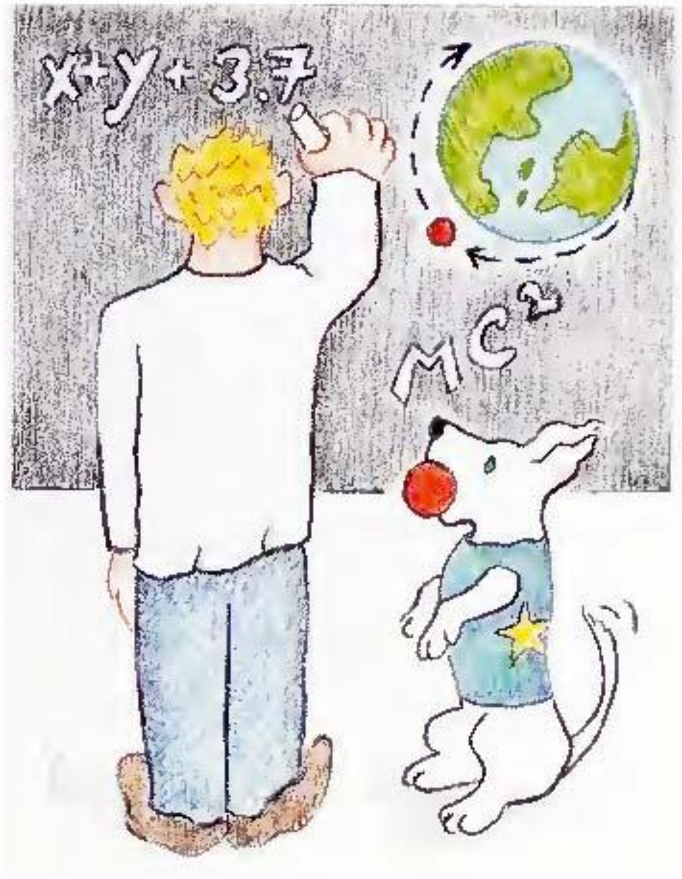


अपनी अंतरिक्ष यात्रा के पहले बैल्का व स्ट्रैल्का साधारण से पिल्ले थे। पर उनमें कुछ असाधारण भी था। वे छोटे आकार के, छोटे कानों व झबरे बालों वाले कुत्ते थे।

वे दोनों ही मादा थे।



पर असाधारण वे इस अर्थ में थे कि वे मास्को की ठण्डी रातों में सोने के लिए गर्म और सूखी जगह, और खाने के लिए पर्याप्त खना तलाश लेते थे।



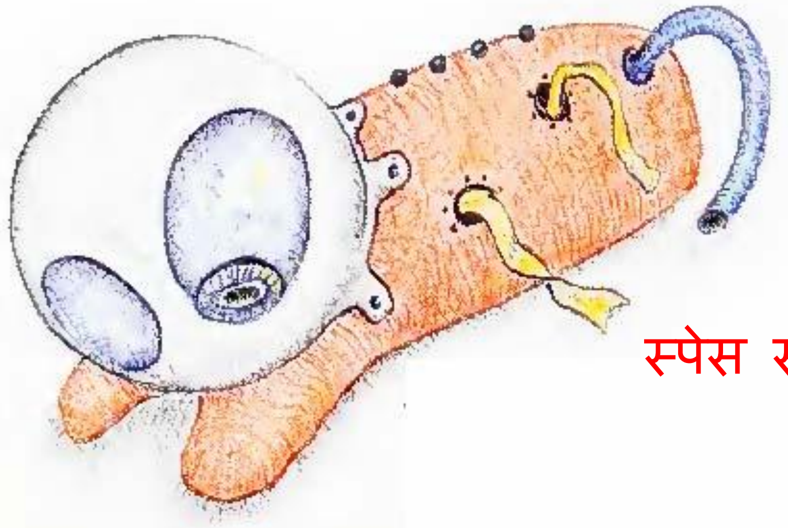
क्योंकि उनकी जोड़ी अच्छी थी, उन्हें अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए चुन लिया गया। वैज्ञानिकों ने सफेद पिल्ले का नाम बैल्का (गिलहरी) रखा। वह खिलन्दड़ थी और उसे दौड़ना अच्छा लगता था।

दूसरी को स्ट्रैल्का (छोटा तीर) नाम दिया गया। वह बैल्का से छोटी थी। उसके रोएं सफ़ेद थे पर उसके चेहरे पर काला मुखौटा था, साथ ही कान भी काले थे। वह बैल्का से ज़्यादा शान्त थी।



हम उस खरगोश, उन चूहों, मूषकों आदि के बारे में कुछ खास नहीं जानते, जिन्हें दोनों पिल्लों के साथ भेजा गया था।

वैज्ञानिकों ने बैल्का और स्ट्रैल्का को अंतरिक्ष में इसलिए भेजा क्योंकि उनका मानना था कि अगर वे दोनों यह यात्रा करने के बाद सही-सलामत लौट आते हैं, तो शायद इन्सान भी अंतरिक्ष की यात्रा कर पाएं।

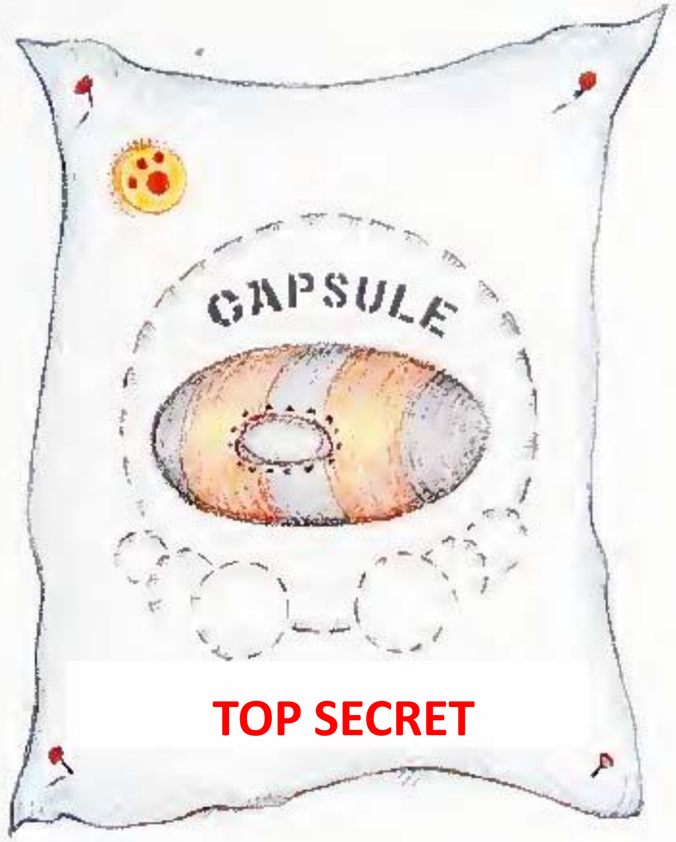


स्पेस सूट

बैल्का और स्ट्रैल्का को प्रशिक्षण देने के लिए मास्को के पास भेजा गया। इन्जीनियरों ने उनका नाप लिया ताकि उनके लिए अंतरिक्ष सूट बनाया जा सके। इन सूटों ने दोनों को अंतरिक्ष यात्रा के लिए तैयार किया।



अंतरिक्ष में इन कुत्तों का कोई वज़न नहीं होने वाला था। प्रशिक्षकों ने उन्हें शून्य गुरुत्वाकर्षण में तैरना सिखाया। उन्हें तेज़ आवाज़ों और रॉकेट के हिलने-डुलने का भी आदी बनाया गया।

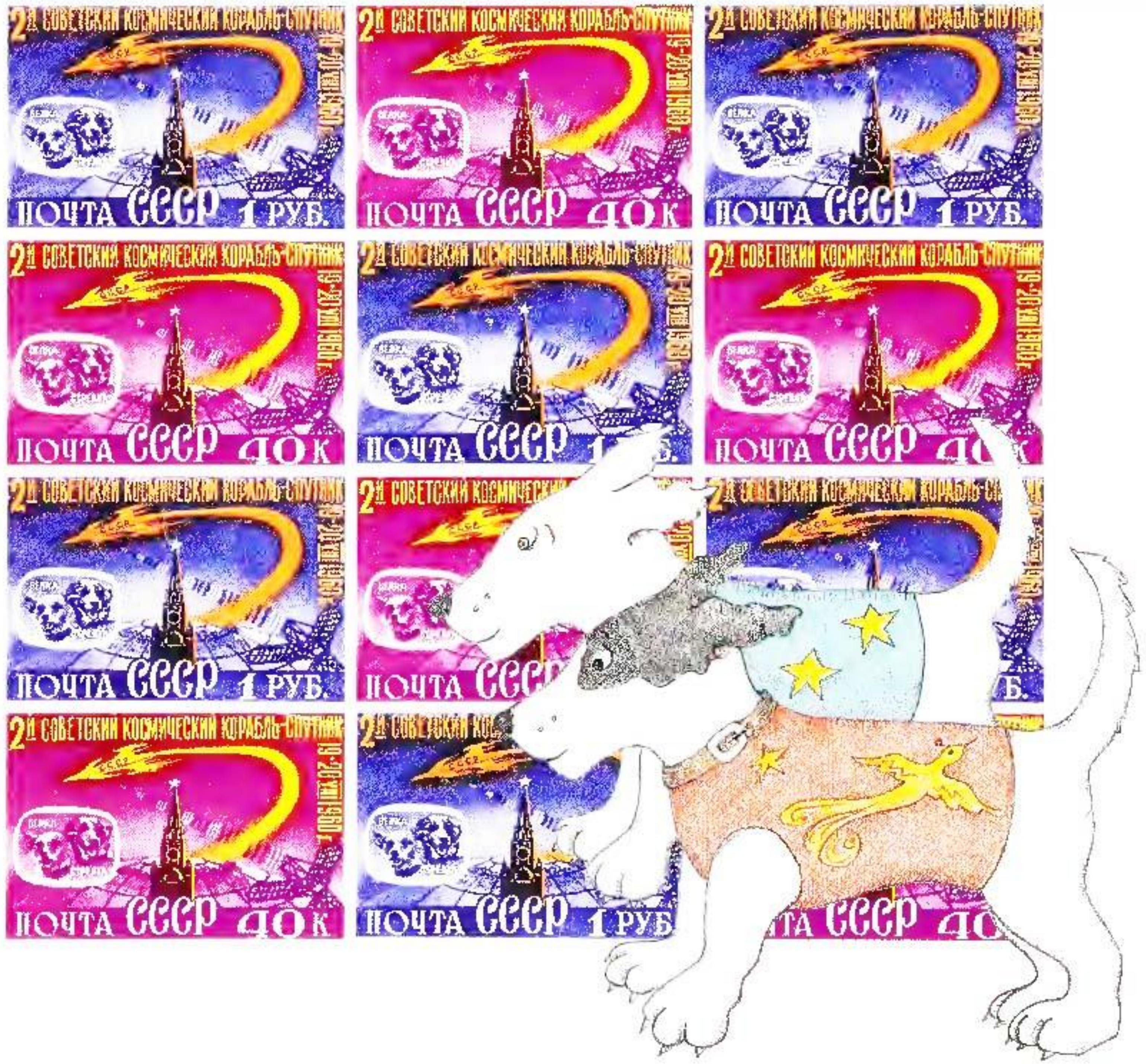


स्पुतनिक-5 में कुत्तों के लिए एक कैप्सूल रखा गया। वह क़रीब 5 फीट लम्बा और 2 फीट चौड़ा था। बैल्का और स्ट्रैल्का को उसके अन्दर बनी काँच की दीवार से अलग रखा गया था। दोनों छोटे कुत्तों के लिए बस इतनी-सी जगह थी कि वे लेट सकें, खड़े रह सकें, और खाने के लिए कुछ आगे बढ़ सकें।

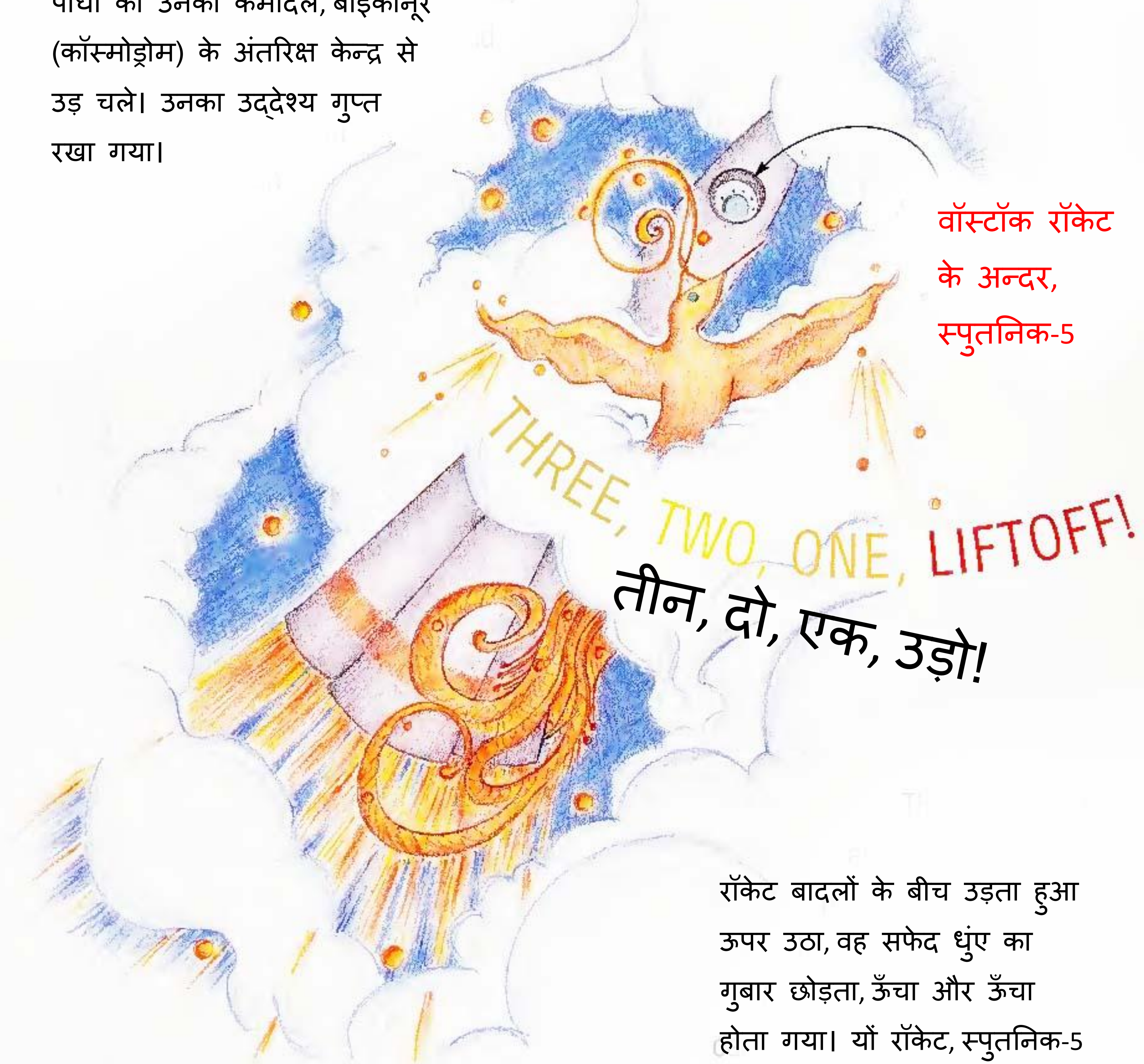
अंतरिक्ष में कुत्तों को खिला पाना भी एक समस्या थी। शून्य गुरुत्वाकर्षण के कारण खाना उनके सिर के आस-पास घूमता। पशु चिकित्सकों ने इसका एक समाधान तलाश लिया। उन्होंने एक स्वस्थ्यवर्धक जैली बनाई जो खाने के बक्से की दीवारों पर चिपकती हो। उन्होंने बैल्का और स्ट्रैल्का को ढक्कन खुलने पर जैली को चाटने के लिए प्रशिक्षित किया।



बैल्का और स्ट्रैलका के प्रशिक्षण के अन्त में, भावी डाक-टिकटों के लिए फोटोग्राफर उनके चित्र खींचने आए। आख़िरकार दोनों कुत्ते अपनी यात्रा के लिए तैयार थे।



19 अगस्त 1960 की रात बैल्का और स्ट्रैल्का, और अन्य पशुओं व पौधों का उनका कर्मीदल, बाइकोनूर (कॉस्मोड्रोम) के अंतरिक्ष केन्द्र से उड़ चले। उनका उद्देश्य गुप्त रखा गया।



रॉकेट बादलों के बीच उड़ता हुआ ऊपर उठा, वह सफेद धुंए का गुबार छोड़ता, ऊँचा और ऊँचा होता गया। यों रॉकेट, स्पुतनिक-5 को बाहरी अंतरिक्ष में ले गया।

अन्दर बैल्का और स्ट्रैल्का को धचके-धक्के लगे, वे कभी आगे तो कभी पीछे खींचे और ताने गए। उनकी आँखों की पुतलियाँ उनके खोपड़ों में धंसीं। उनकी नाक मानो झटके से खिंची।





रॉकेट की गरमी ने उनके पंजों को जलाया और उनके गिर्द फैल गई।



उस तेज़ गरमी ने खरगोश की मूँछों को जला कर राख़ कर दिया।

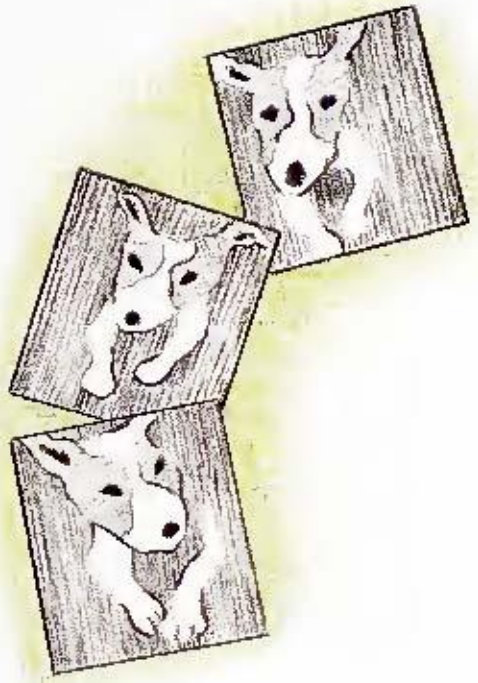
सारे पौधों को भी झुलसा दिया।



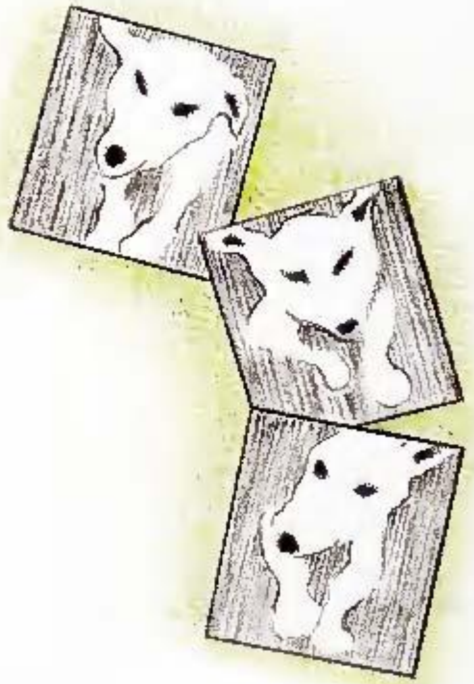
इस सारी उत्तेजना के बाद बैल्का और स्ट्रैल्का गहरी नींद सो गए।



उनके शरीर पर लगाए गए इलैक्ट्रोडों से उनके दिल की धड़कन और नब्ज़ रिकार्ड होती गई। वे पहले ज़ोर-ज़ोर से हाँफते लगे। पर कुछ देर बाद वे सामान्य हो गए। तब स्पुतनिक-5 पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा। बैल्का और स्ट्रैल्का अपनी बाकी यात्रा के दौरान चुपचाप रहे।

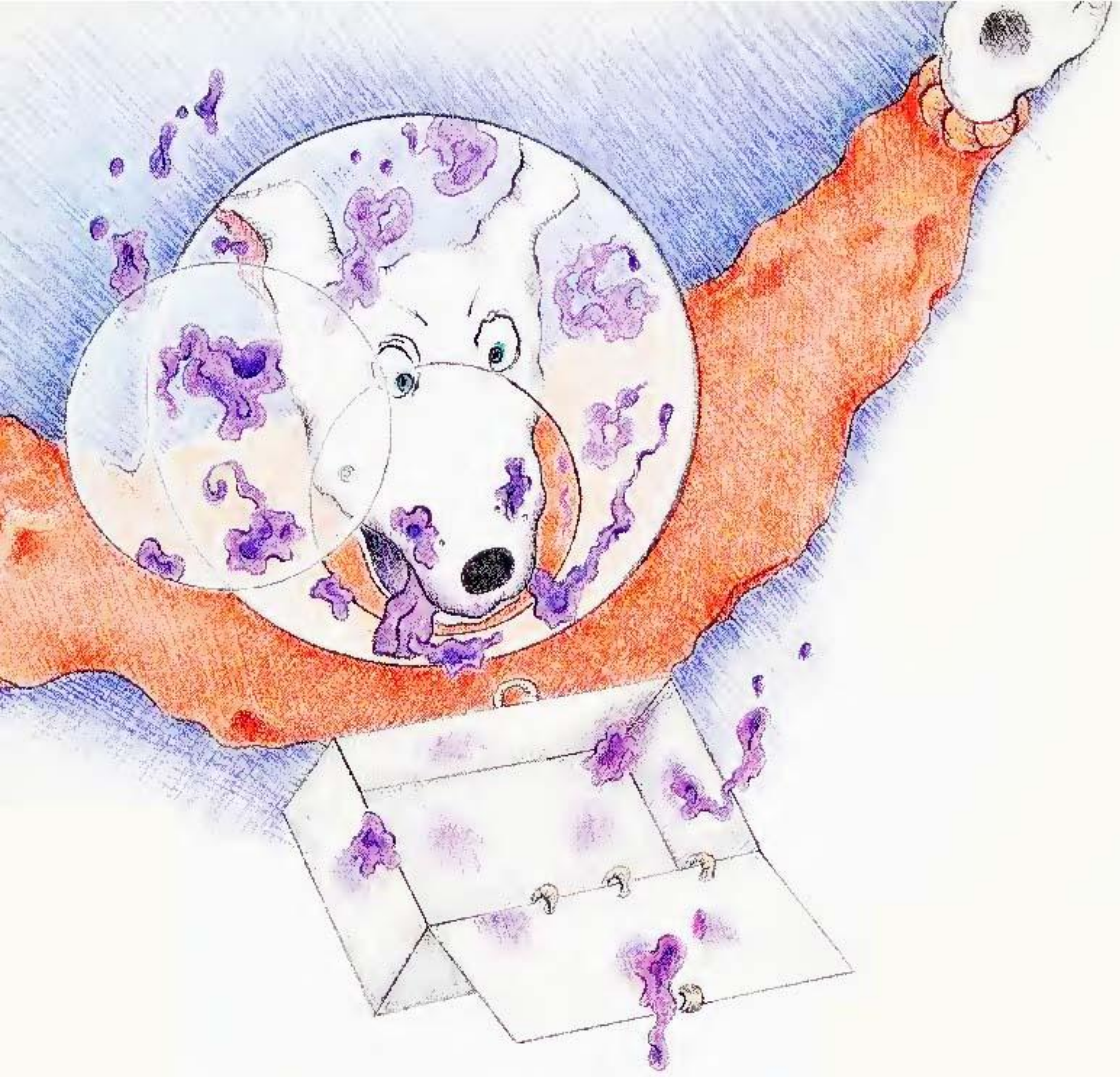


इधर पृथ्वी पर वैज्ञानिकों ने इन सूचनाओं का अध्ययन किया। और बैल्का और स्ट्रैल्का को स्पुतनिक टीवी से देखा। क्योंकि उनके रोएं सफेद थे, वे श्वेत-श्याम टीवी पर साफ दिखाई दे रहे थे।

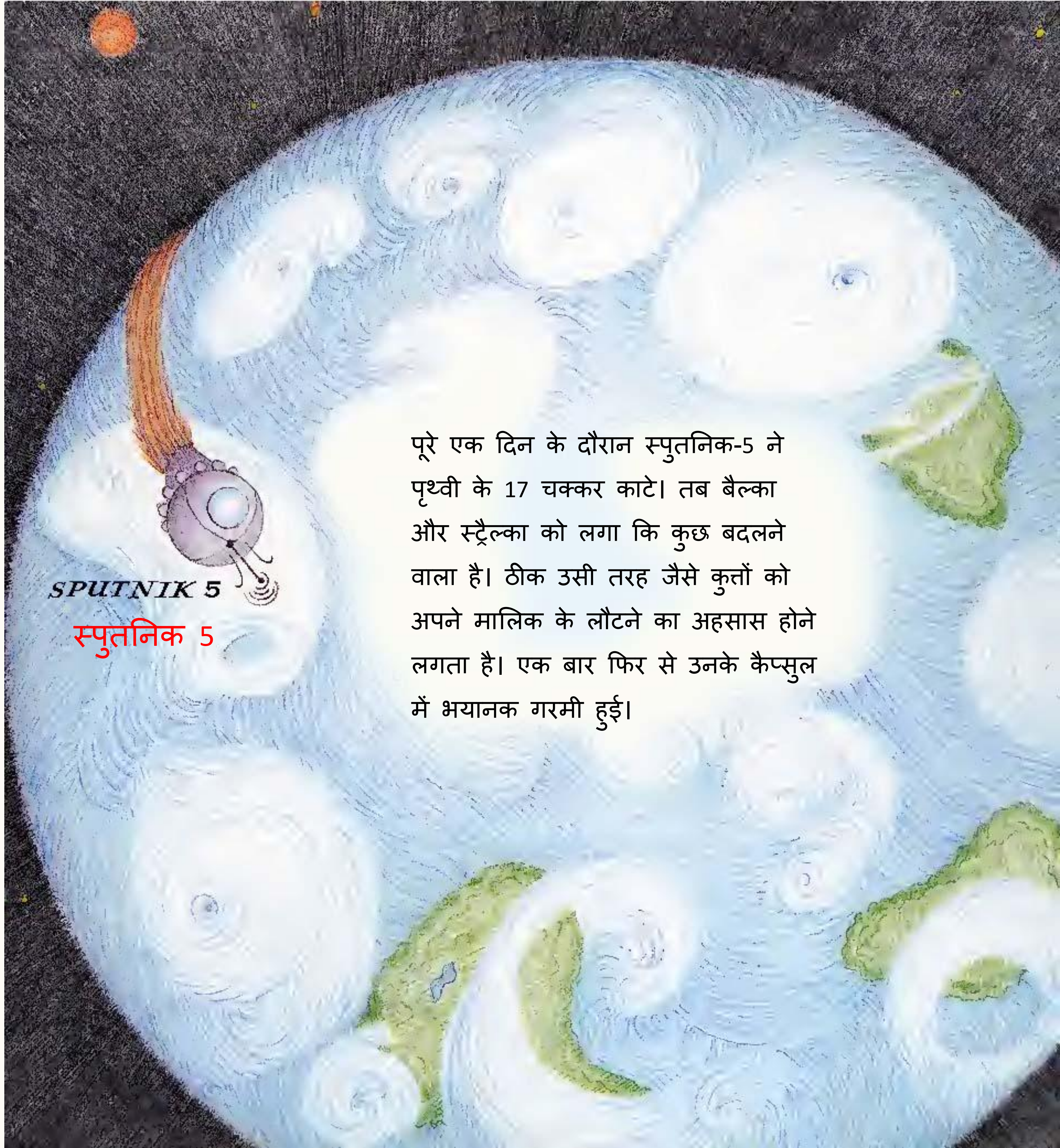




वैज्ञानिकों ने बैल्का और स्ट्रैल्का को अपने माइक्रोफोन पर भौंकते सुना।

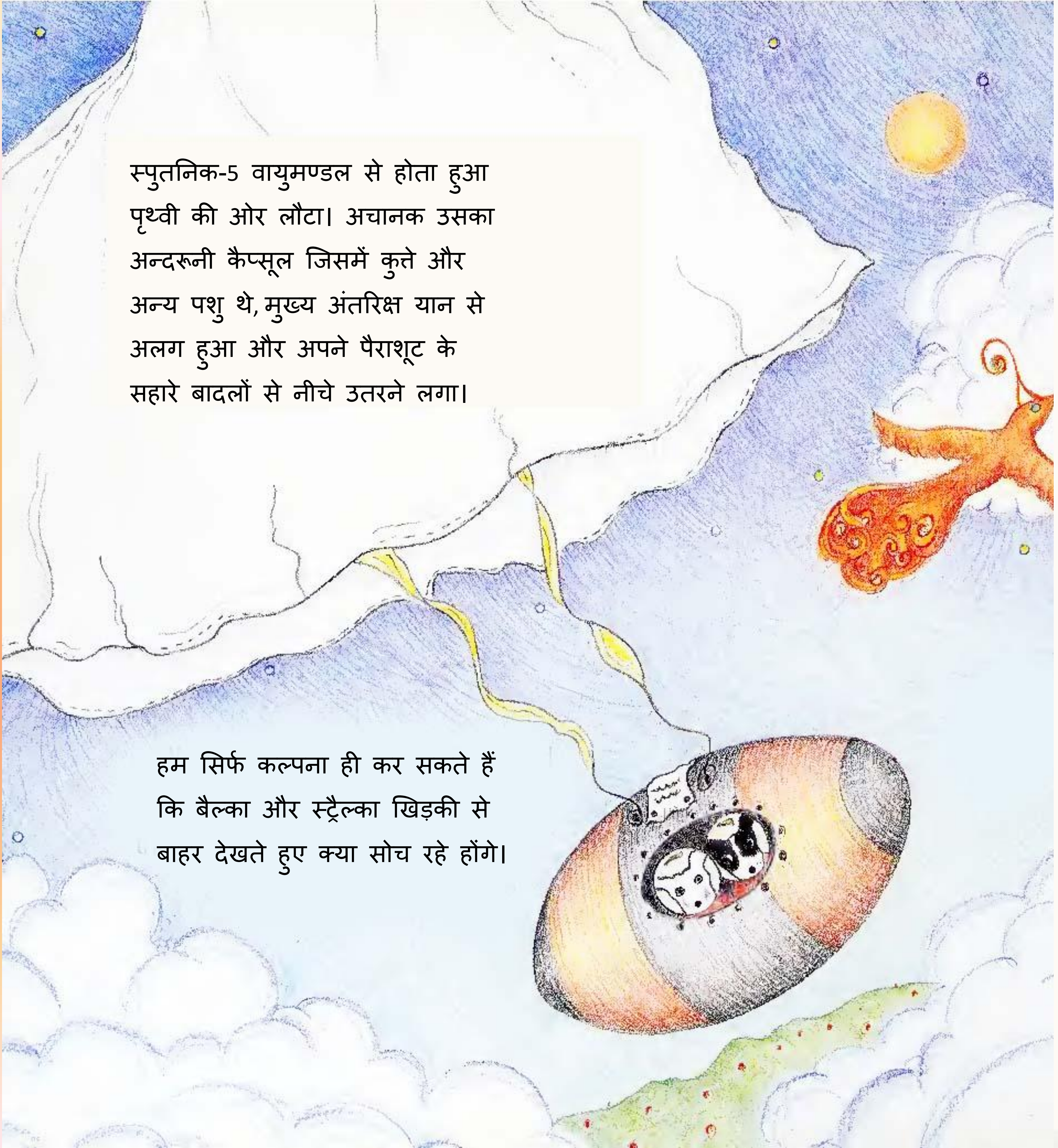


बैल्का और स्ट्रैल्का ने अंतरिक्ष में भी वह सब किया जो कुत्ते करते हैं। उन्होंने खाना खाया। वे सोए। पर उन्हें यह कतई अच्छा नहीं लगा कि उनके पंजे ज़मीन पर टिकने के बदले हवा में तैर रहे थे। बैल्का ने कुछ ज़्यादा अंतरिक्ष जैली खा ली और कै कर दी।



पूरे एक दिन के दौरान स्पुतनिक-5 ने पृथ्वी के 17 चक्कर काटे। तब बैल्का और स्ट्रैल्का को लगा कि कुछ बदलने वाला है। ठीक उसी तरह जैसे कुत्तों को अपने मालिक के लौटने का अहसास होने लगता है। एक बार फिर से उनके कैप्सुल में भयानक गरमी हुई।

स्पुतनिक-5 वायुमण्डल से होता हुआ पृथ्वी की ओर लौटा। अचानक उसका अन्दरूनी कैप्सूल जिसमें कुत्ते और अन्य पशु थे, मुख्य अंतरिक्ष यान से अलग हुआ और अपने पैराशूट के सहारे बादलों से नीचे उतरने लगा।



हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं कि बैल्का और स्ट्रैल्का खिड़की से बाहर देखते हुए क्या सोच रहे होंगे।

अगर किस कारणवश कैप्सूल उस जगह नहीं उतरता जहाँ उसे उतरना चाहिए था, तो कैप्सूल के ऊपर सूचना लिखी थी। यह सूचना कैप्सूल मिलने वाले को चेतावनी देने के लिए थीः

ВНИМАНИЕ!

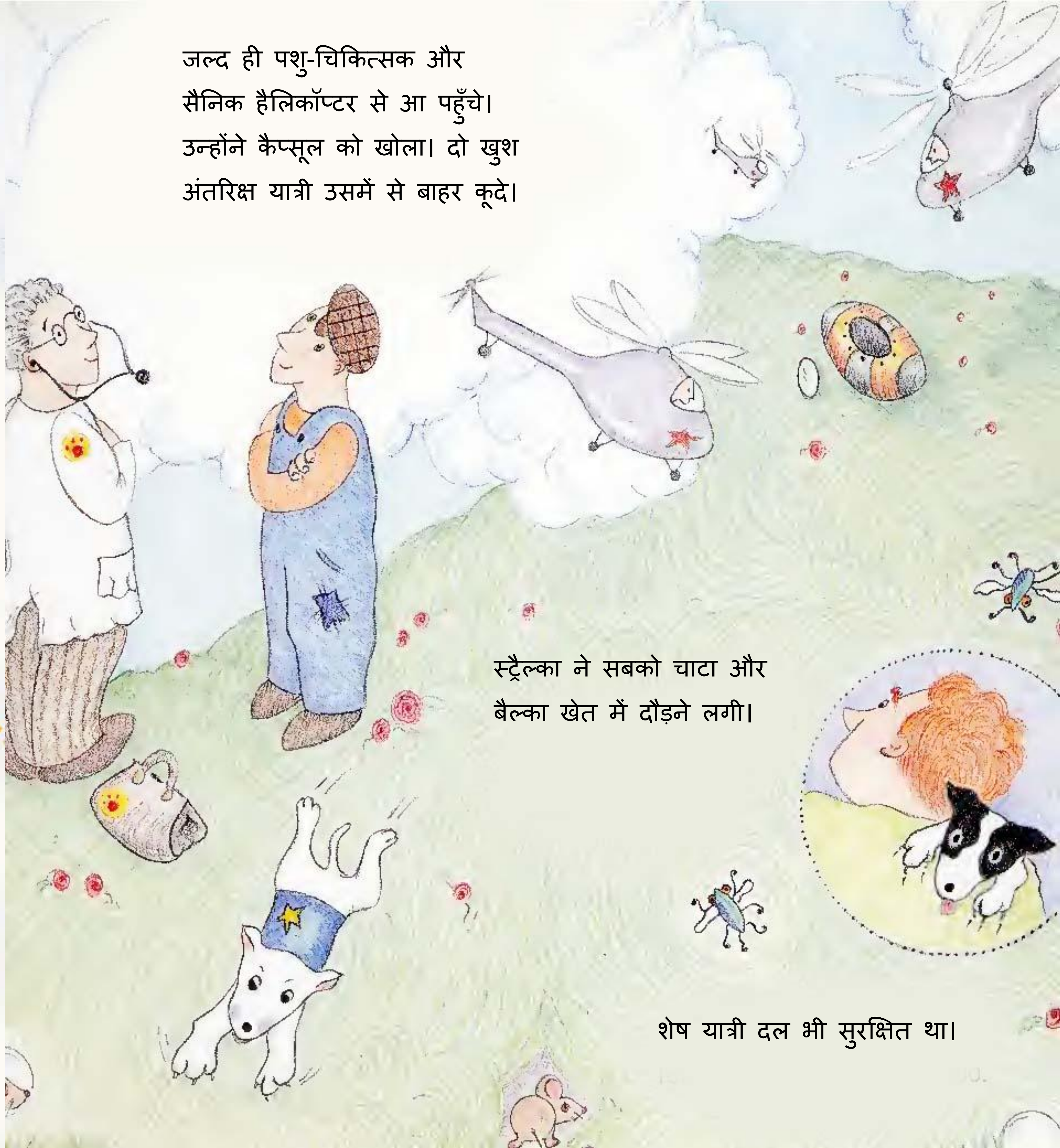
अगर आपको यह कैप्सूल मिले तो उसे न खोलें। फौरन स्थानीय अधिकारियों को सूचना दें!



जिस जगह वह धरती से टकराया, वहाँ एक गड्ढा बन गया।



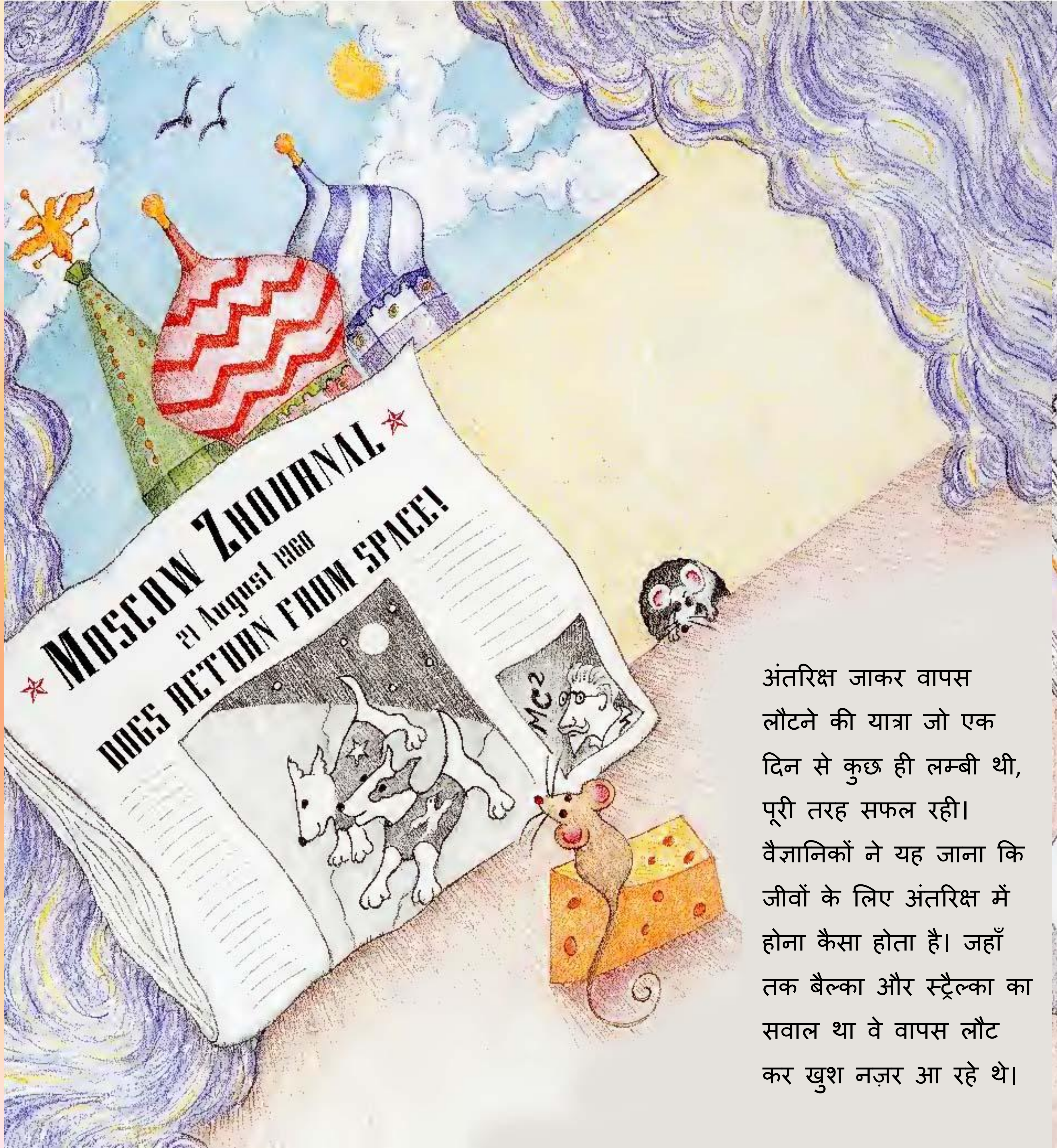
आसपास के खेतों में काम करने वाले किसान कैप्सूल को हैरत से देख रहे थे। वे सावधानी से उसकी ओर बढ़े। उन्होंने उस पर लिखे निर्देश को पढ़ा। कैप्सूल की खिड़की से अन्दर झांक कर देखा। बैल्का और स्ट्रैल्का उन्हें अन्दर से घूर रहे थे। हालांकि वे थके हुए थे, उन्होंने भौंकना शुरू कर दिया।



जल्द ही पशु-चिकित्सक और सैनिक हैलिकॉप्टर से आ पहुँचे। उन्होंने कैप्सूल को खोला। दो खुश अंतरिक्ष यात्री उसमें से बाहर कूदे।

स्ट्रैल्का ने सबको चाटा और बैल्का खेत में दौड़ने लगी।

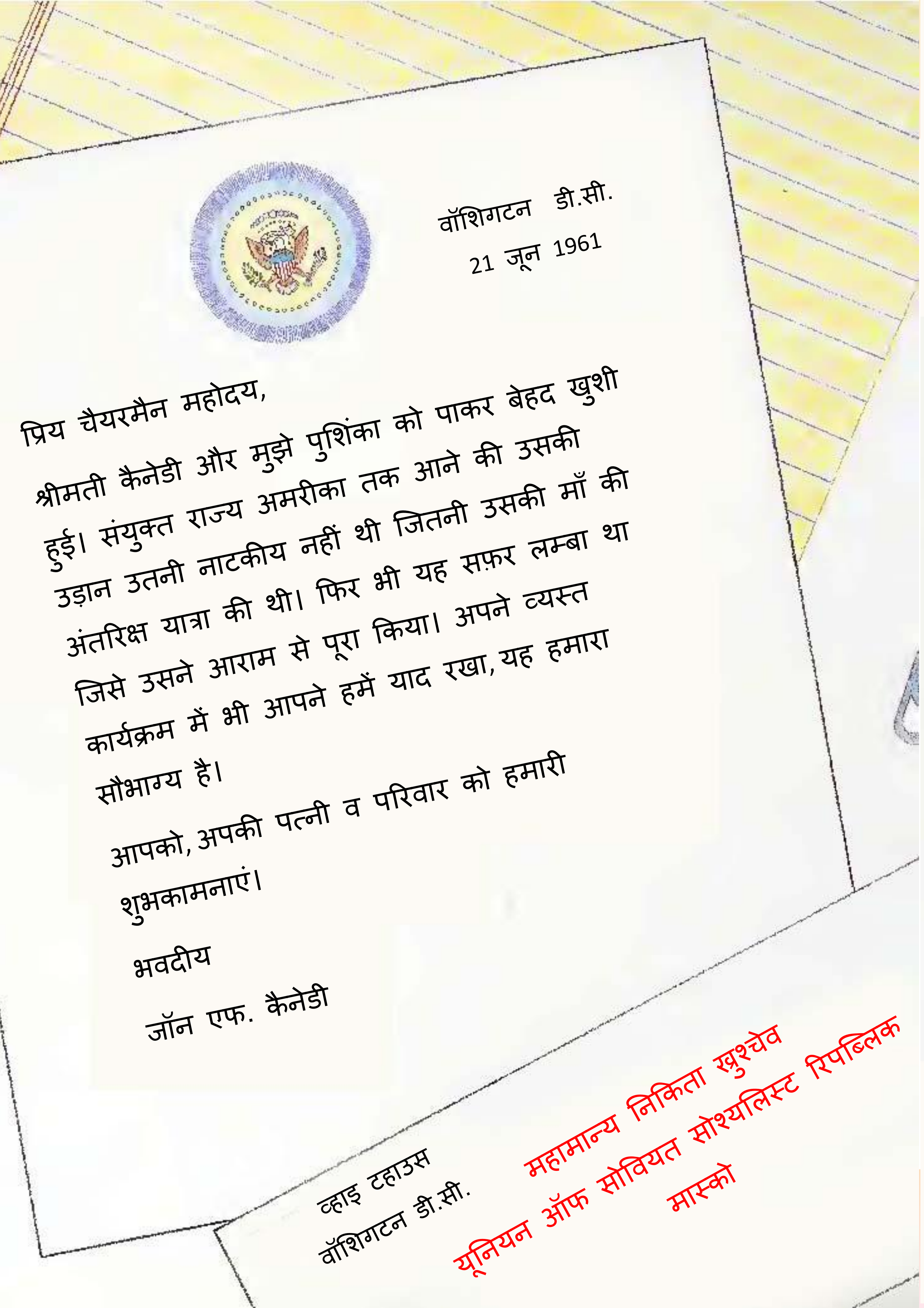
शेष यात्री दल भी सुरक्षित था।



अंतरिक्ष जाकर वापस लौटने की यात्रा जो एक दिन से कुछ ही लम्बी थी, पूरी तरह सफल रही। वैज्ञानिकों ने यह जाना कि जीवों के लिए अंतरिक्ष में होना कैसा होता है। जहाँ तक बैल्का और स्ट्रैल्का का सवाल था वे वापस लौट कर खुश नज़र आ रहे थे।



पर कहानी यहीं खत्म नहीं होती। पृथ्वी पर लौटने के कुछ महीनों बाद स्ट्रैल्का ने छह स्वस्थ पिल्लों को जन्म दिया। उनमें से एक, पुशिंका (झबरीली) को रूस ने अमरीका के राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी और उनकी पत्नी जैकलीन कैनेडी को भेंट किया।


वॉशिगटन डी.सी.
21 जून 1961

प्रिय चैयरमैन महोदय,

श्रीमती कैनेडी और मुझे पुशिंका को पाकर बेहद खुशी हुई। संयुक्त राज्य अमरीका तक आने की उसकी उड़ान उतनी नाटकीय नहीं थी जितनी उसकी माँ की अंतरिक्ष यात्रा की थी। फिर भी यह सफ़र लम्बा था जिसे उसने आराम से पूरा किया। अपने व्यस्त कार्यक्रम में भी आपने हमें याद रखा, यह हमारा सौभाग्य है।

आपको, अपकी पत्नी व परिवार को हमारी शुभकामनाएं।

भवदीय

जॉन एफ. कैनेडी

राष्ट्रपति कैनेडी ने चेयरमैन निकिता ख्रुश्चेव को पत्र लिखा। वे उस समय यूएसएसआर के नेता थे।

समय के साथ पुशिंका के भी चार पिल्ले हुए। उनका गुरूर से भरा पिता चार्ली, प्रथम परिवार के कई कुत्तों में एक था। प्रथम बच्चों, कैरोलाइना व जॉन जॉन को अक्सर व्हाइट हाउस में इन पिल्लों के साथ खेलते देखा जा सकता था। राष्ट्रपति कैनेडी उन्हें पपनिक्स कहते थे।



चार्ली और पुशिंका बटरफ्लाय, व्हाइट टिप्स, स्ट्रीकर, और ब्लैकी के साथ।

इस कहानी के बारे में



यह कहानी एक सत्यकथा है, जो सच्चाई के साथ कल्पना पर भी आधारित है। क्योंकि बैल्का और स्ट्रैल्का हमें यह नहीं बता सके कि उन्होंने अंतरिक्ष में कैसा महसूस किया। सो उसकी कल्पना करनी ही पड़ी।

जब स्ट्रैल्का की एक मादा पिल्ले, पुशिंका संयुक्त राज्य अमरीका आई, सरकारी अधिकारियों को लगा कि कहीं उसे जासूसी करने तो नहीं भेजा गया है। सीक्रेट सर्विस (खुफ़िया पुलिस) के एजेंटों ने पुशिंका का एक्स-रे करवाया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उसके अन्दर कोई खुफिया माइक या कैमरा तो नहीं है। जो उसमें नहीं था।

श्रीमति जैकलिन कैनेडी ने दो पपनिक्स अपने बच्चों के लिए रखे। तब उन्होंने दो बच्चों को चुना एक न्यू यॉर्क व दूसरा मिसूरी से, जिन्हें बाकी दो पपनिक्स भेजे गए।

स्पुतनिक-5 के समय रूस जिसे तब यूएसएसआर कहा जाता था, व अंतरिक्ष की खोज में प्रतिस्पर्धी थे। बैल्का और स्ट्रैल्का पहले जीव थे जिन्होंने पृथ्वी की परिक्रमा की और सकुशल वापस लौटे। जो जानकारियाँ रूसी वैज्ञानिकों को उनकी यात्रा से मिली, उसने पहले रूसी अंतरिक्ष यात्री यूरी गागारिन को 1961 में अंतरिक्ष भेजने में मदद की।

रूस अब यूएसएसआर नहीं रहा। उसे अब रशियन फेडरेशन कहा जाता है, और वह अब संयुक्त राज्य के साथ मिल कर अंतरिक्ष की छानबीन कर रहा है।

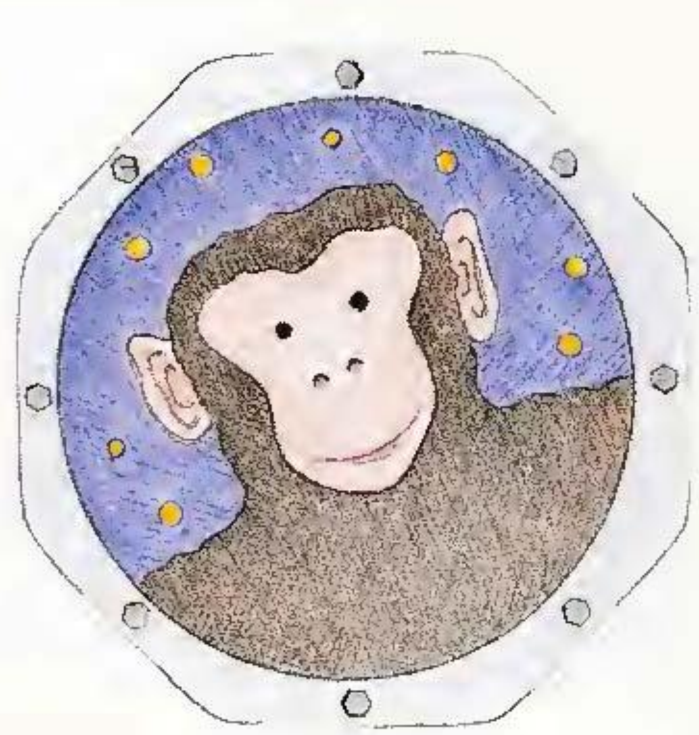
अंतरिक्ष जाने वाले अन्य पशु

अंतरिक्ष जाने वाले अन्य पशुओं में कुत्ते, बन्दर, चिम्पान्ज़ी, चूहे व कीट शामिल थे।

कुछ पशु प्रमियों ने पशुओं को जिन परिस्थितियों में भेजा जाता था उसका विरोध किया। परन्तु अधिकांश वैज्ञानिकों का कहना है कि इन पशुओं की अंतरिक्ष यात्राओं के बिना मनुष्य को अंतरिक्ष में नहीं भेजा जा सकता था। कुछ मशहूर पशु अंतरिक्ष यात्री थे:

यूएसए: सैम, एक बन्दर (1959), हैम तथा ईनोस, चिम्पांज़ी (1961)

रूस (यूएसएसआर): 1957 में लाइका (भौंकू) नामक कुत्ता पहला जीव था जिसने पृथ्वी की परिक्रमा की। ज्वैद्दोच्का (नन्हा सितारा) 1961 में मानव की अंतरिक्ष यात्रा के पहले अंतिम कुत्ता था जो अंतरिक्ष में गया। उसकी यात्रा में उसके साथ ईवान ईवानोविच नामक पुतला (डमी) था, जिसका काम मानवों के लिए बनाए गए अंतरिक्ष सूट तथा इजैक्शन सीट (यान से बाहर निकलने वाली कुर्सी) की जाँच करना था।



अंतरिक्ष में हैम (1961)



वैज्ञानिक ओलेग गज़ैन्का के साथ बैल्का व स्ट्रैल्का।



ऊपर बाएं से: राष्ट्रपति कैनेडी, जॉन जॉन, श्रीमती कैनेडी पपनिक्स के साथ।

दाहिनेः कैरोलाइन, चार्ली के साथ तथा उसके पीछे, शैनॉन



एस. रूथ लुब्का अपने पति के साथ न्यू जर्सी के आइगर मोराविया में रहती हैं। जब रूसी कुत्तों को अंतरिक्ष में भेजा गया वे हार्टफर्ड, कैनेटिकट के वाइन स्ट्रीट एलिमेंट्री स्कूल में पढ़ती थीं। वे तब से ही इन सोवियत कुत्तों के बारे में सूचनाएं एकत्रित करती रहीं है। मिज़ लुब्का ने कैनेटिकट में वकालत की, और न्यू यॉर्क व बॉल्टीमोर में कला का अध्ययन किया। पपनिक्स उनकी पहली बाल पुस्तक है।



CANIS MAJOR
(GREAT DOG)
CANIS MINOR
(SMALL DOG)
LEPUS (RABBIT)